दानलीला ग्रन्थ

श्री पी न छ्न य मः श्रा
दो च श्रादिकरें
परणाम ब्रजविहारीलालकों
इष्ट आनंदके श्याम गुपयन
प्रियगोपालकों १
इकदिन श्रीगोपाल प्रभु यह
ठानी मन मांहं प्रातशात चल
लीजये गुपग्यन सों वन मांहं
२ सांझ समे सब ग्वा
लनकों ढिग टेर गुपालने वच
न सुनायो सुनो रे भैया बात
हमारी हम इक नीको मतो म
तायो अपने अपने दाऊकी
सौंह चटकाहट सुन घरतें सब
आयो काइ सांकरी गली में
चलके धाप धाप के गोरस षा

(८८२)

दा.ली.
२

यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ इकइक लुकटी हाथ गह प्रान औहो सब ग्वाल ॥ बनमैंयाविधमनोकर घरआए गोपाल ३ ॥ कवित्त ॥ अबप्रानकी आसनेंग्वालनकों छिणनीदनै पडतरैनके माहीं ॥ तारा गिननेंसंवरैनगई अजहूंनो भोर प्रगटभईनाहीं ॥ बडूसुखमनरैंनापैंनाक्ष्या संतोषग्वाल जहांनाईं ॥ ग्यारह सहस्त्र ग्वाल लैलुकटी पोहुंचे नंदद्वार केपाहीं ॥ ४ ॥ दोहा ॥ संकल खडकाव नलग्यो कोई सीटीमार ॥ कोईढीठटेर नलग्यो जागोनंदकुमार ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ यों टेर ग्वालनकीसुनके नंदनंदन ने दोऊ नै

नउघाडे॥ तव आनंदने परणा
मकीयो तव आनंदकों ब्रजराज
पुकारे॥ अति प्रात भई न जगा
यो तें अब वेग ल्याव श्रृंगार हमा
रे॥ श्रृंगार तवे आनंद ल्यायो अं
ग अंग विषें ब्रजराज संवारे॥ ६
॥दोहा॥ सीसमुकट करमें लुकट
कटतट कछनी लाल॥ कांधे कम
री पीत पट कटगर गुंजन माल॥
॥७॥ पुन नाना आभूषण पहरे
श्री मोहनने अंग अंगके माहीं॥
वलदाऊकों निज संग लयो आ
पोहुंचे तव ग्वालन के पाहीं॥ स
व ग्वालनने परणाम कीयो ति
नसों बोले ब्रजराज गुसाईं॥ मेरे
होवे गचलो वनकों गोपी कहूं सी

दा॰ली॰
३

मनेंजावेंनाहीं॥ ८ ॥ दोहा ॥ गोवें ग्वालगुपालवलजहांसांकरीखोर॥ रोकडगररठाढेभएनिहठांनंदकिशोर॥ ९ ॥ कवित्त ॥ क्षिणपाछेंसीसनधरमटकीदधमाषणजोजामीटरकी अनिमीठीजोप्यारीनटकी आपोहुंचीनाहिडगरग्वाला॥ विछुवनकीजवरुंकारसुनीनवजानगएव्रजराजगुणीग्वालनकोंनीचेठाढोकरऊंचेचढदेख्योगोपाला॥ सवसीसनपरगोरसकोंधर अंगअंगविषें आभूषणभरवनमेंआवतमनमेंनहींडरहस्तीसमरूमनतसववाला॥ लैलुकरीठाढहोभैयातुमकोंहैसप्तपिना

मैया ॥ सवकोलूटो माषणदैह
कीनी आज्ञा योंनंदलाला ॥ १० ॥
दो० ॥ नवतो लुकटी हाथगह
रोकडगर सवग्वाल ॥ खडेसां
करीगली पर आय पोंहुंची व्रज
वाल ॥ ११ ॥ चौपै० ॥ चाहें गोपी आ
गे चालें आडे कर लुकटी कों नव
हीं रोकी ग्वालन सव व्रजनारी ॥ इ
क दिसकों वलदाऊ ठाढे ग्वालाइ
क दिस इक दिस ठाढे निजवनवा
री ॥ यह गति नव देख भई चक्र
न गुपयन नव यह मन मांहं वि
चारी ॥ यह देख भटू नंद को ढोटा
वनवी चकर न अववट मारी ॥ १२
गोपिका ऊचुः ॥ दोहा ॥ नववोल

इकगोपिका सुन नंद के छैल ज
कौनकाज कहु आज तूं रोकत हम
री गैल ॥ १३ ॥ कवित्त ॥ अवलौंतौ
या व्रज के भीतर कोई न भयो है
हमारो रुकैया ॥ तुम अव रोकन
लागे हम कौं कहा दीन सिखाय
तुमे अव मैया ॥ ऐसें रोकल ला
हम ने जानी इक ठेक रहो वहु मु
हुरु रूपैया ॥ दूध दही हमरो विग
रत है काहे इतने भए ढीठ कन्हैया
॥ १४ ॥ श्री गोपाल उवाच ॥ दोहा ॥ गु
पयन की यह वात सुन वोले श्री
गोपाल ॥ रुई कान नें काढ के सु
नो सवी व्रजवाल ॥ १५ ॥ कवित्त ॥
तुम कों वसतें वेचत गोरस वहु
काल भयो या गोकुल माहीं ॥ भ

दा·ली· लोसांचकहोवावाजूकोंकभूं
५ दानदियोअथवाकेनाहीं॥ हम
तोनितदामभरेंनृपकोंउनकों
देंजवलेवेंतुमपाहीं॥ हमघरन
हींहोनरसायनकछुजोदेंहमद्र
व्यकंसनृपनाईं॥१६॥ दोहा॥ या
नेंयाहीमैंभलोहमरीदेओजगा
त॥ विनालीयेनहींमानहूंकोट
कहोतुमवान॥१७॥ गोपिकाउ चु
सिरपरमुकटीकरमैंलुकटीआ
राढेभएवनछैलचिकनयां॥ कां
नेकमरीमोलहैदमरीकानीहम
रीकटमैंकसकेनटलालकछनि
यां॥ अवचाहनहोहमकोंलूटोक
हाजान्योंहमेधुनयांमनयां॥
जहांकेतुमहोतहांकीहमहैंहम

कोंजिनजानललावनियां १८
नेरीधमकीतेंनांडरेंहम
हैंचतुरग्वाल द्वयगुलचामुख
देयकेनिकसजांहंगोपाल १९
श्री पा उ च याबि
धसुनगुपसनकीवाणीबोलेव्र
जराजसुजानज्ञाता कहारीतु
मकोंअवभूतचढ्यो अथवाअ
वभांगभईअज्ञाता अथवाम
दयोवनकोचढयोजानेंमनअं
भयोमदमाता मैंपूतचौध
रीनंदकोहूंमोसोंभाषोऐसीजि
नवाना २० ऐसेव
नकठोरअवतुममोयकहेवषा
न तौमैंवेटोनंदकोजोदुगनोले
ऊंदान २१ गो का चुः

दा. ली.
६

दोहा ॥ भुजउठायगोपीकहनसुकु
टीहरिननतान ॥ ललादेखहेंकौ
नविधहमसोंलेहोदान ॥ २२ ॥
कवित्त ॥ यहछोटोसोमुखलेअप
नोअववेगललाजसुमनढिग
जाओ ॥ जोगोरसकोंतुमचाह
नहोसोगोरसतुमहमसोंनहीं
पाओ ॥ क्योंविरथांरोकहमेव
नमेंकाकाजललाराडमचाओ ॥
हमजाननहैतुमरेगुणसवजि
नगुणअपनेहमसोंखुलवा
ओ ॥ २३ ॥ दोहा ॥ आओमानो
श्यामघनमारगरोकोनांहं ॥ ना
हींगुणअवपोलहेंतुमरेसवया
ठांहं ॥ २४ ॥ श्रीगोपालउवाच ॥ दोहा
यहसुनबोलेश्यामघनहमरे

गुणहैं जोय ॥ ब्रह्मा नारद व्यास
शिव गाय सकल नहीं सोय ॥ २५ ॥
[illegible] ॥ तुम नारन मैं यह बुद्धि
कहां गुण नाम अनंत हमारे गा
ओ ॥ मैं वालक हूं मो वालक को
युगकोट अनंत लौं भेवन पाओ
अवनी की वात यही है गी मोय
दान देओ मथुरा कों जाओ ॥
नहीं लूं दूं गो दाऊ की सौंह जो तु
म मो कों वहु काल खिजाओ
२६ ॥ दोहा ॥ मो कों छुधा पिया
स अति कीयो कल्ले ओ नांहं ॥
मेरो सूष न कंठ अव दयान तु
म मन मांहं ॥ २७ ॥ गोपिका
वाच ॥ दोहा ॥ गोपी वोलीं श्याम
घन सुनो सांन्च यह वात ॥ छुधा

दा॰ली॰
७

लगी तौ भी षल्लेव काहे कहन ज
गान ॥२८॥ कवित्त ॥ नाम जगान
को काहे कहो अव भी खल्ला हम
सों कछु लीजे ॥ जो दाम जगान
के मांगन हो तौ माल जगाती अ
व कहदीजे ॥ दंडो न करो कर जो
ड दोऊ नव गोरस आह मसों क
छु पीजे ॥ नहीं जाओ लल्ला ह
म आगे तें हम में या भांत न को
ई पसीजे ॥२९॥ दोहा ॥ हाथ जो
ड जो मांग हो तौ हम देंह गुपाल ॥
और जो लेओ जगान तुम देओ
व नाय अव माल ॥ ३० ॥ श्री गोपा
ल उवाच ॥ दोहा ॥ यह सुन गुपय
न के वचन बोले श्री गोपाल ॥ भि
क्षुक कहा मोय जानयो भीख

सा॰ली॰
८

यो अब खस्म हमारो॥ आनंद को
मिठ बोल लगन मोहन को प्यारो
॥३३॥ दोहा॥ धींग धींग कर जोन्
होल्लूट लेहं गोपाल॥ माल बनाए
विनक भूं बूंद न देंअ जवाल॥३४॥
श्री गोपाल उवाच॥ कुंडलिया॥ यह
सुन के बोले न वे मोहन चतुर सु
जान॥ सकल जगाती माल अब
सुनो सखी दे कान॥ सुनो सखी
दे कान किरानो आदि वषानो॥
केसर चंदन जान सबन अंग
न लिपटानो॥ नैनन कजराव
ऊन माथ कस्तूरी वेंदी॥ केशन
वीच फुलेल पगन मैं राजन म
हंदी॥३५॥ सोरठा॥ यही किरा
नो जान॥ वहुर कपड गद्दी कहें

देनब्रजवाल ॥ सुनोसवीब्रजवा
लकहामोयभिक्षुकजानो ॥ मैहूं
तुमरोखस्मयही निश्चयकरमा
नो ॥ जोतुमदेहोमोययहीतुमका
रजआवे ॥ पतिसुनकोंजोदेओ
सोसवविरथांहीजावे ॥ ३१ ॥
अपनोपतिमोयजानकेसेवाक
रोवनाय ॥ औरजगानकोमाल
सवइकइकदेऊंगिनाय ॥ ३२ ॥
गो ॥ का ॥ वा ॥ ॥
मधुरवचनसुनछलकेहंसनल
गीसववाल ॥ सुनोभटूगोपाल
कीनईभईयहचाल ॥ नईभई
यहचालकभूंआगेनहींदेखी ॥
आगेहेयेवालकरनअववहुवि
धसेखी ॥ हमसोंकरनठठोलभ

इकइककोलेंदान॥ नवहमवे
टनंदके ॥३६॥ ॥ सालूकेडं
डयेसीसनपर जिनकों लागीव
हुतकिनारी॥ कपडधूरकीवनी
ओढणी जिनके आंचलपछू भा
री॥ मखनूलीकीसववनी कंचुकी
जिनमैंदोदोसेव अनारी॥ लहंगा
मशरू खीमखापके पहरेहोस
वव्रजनारी ॥३७॥ ॥ नाडा
रेशमकेवहुत फुंदनाजिनेअने
क॥ याविधतुमवस्त्रधरनसव
गोपीइकएक ॥३८॥ ॥ अव
आभूषणजहांलौंननमैं चित
लायसुनोसवव्रजनारी॥ वंदी
टीकेसीसनसोहन जिनवीचर
ननलागेभारी॥ झुमकाकरण

सासक नकवारा॥ गजमु
तीनाकन में जिनमें वेस
वन्यारी॥३९॥ दोहा॥ अ
ष एा कंठके सो सब करें कप
मोय गो धनकी स म्रहै इक
कोले ऊं दान॥४०॥ कवित्त॥
नी कंठी हार ओर मुक्तन
ला॥ डुलरी तिलरी माल औ
पाकली विशाला॥ वहुर धु
गीजा न उर वसी गर में सोहै
हुर पंचलड माल हमारे म
मोहे॥४१॥ दोहा॥ भुजावंद
न कनक छन्न पछेली हाथ॥
छ्ला मुंदी आरसी चूरी जिन वे
थ॥४२॥ कवित्त॥ पायन में

रसोहनहैं जिनऊपरहेमकी
झांझविराजें॥ अंगुलनमैंकं
चनकेविछुवासोछमछमछ
मछमछमछमवाजें॥ लक्ष
णकोकंचनहैइनमैंऔररत
नअमोलअतोलविराजें॥ इ
कइककीलेंहजगातअवहम
काहूविधकरतुमसोंनहींला
जें॥ ४३॥ ॥ जहांलौंमाल
गिनाइयोअवहमनेतुमपांहं
भलोकहोकोसोंजकीअवजगा
नहैनांहं॥ ४४॥ गो का चु
यहसुनवोलीगो
पिकासुनढोटावटमार तेरी
अवहमनंदघरजाकेकरेंपुका
र॥ जाकेकरेंपुकारनंदकोढीठ

कन्हैया॥ मथुराकोजोपंथनहां
कोभयोलुटैया॥ नंदरायकेसहि
ततुमेनहां पकडमंगावें॥ तोकों
देकेदानबकुनहमनहांरिझावें
॥४५॥ श्रीगोपालउवाच॥ सोरठा॥
यहसुनवचनरिसाल॥ गुपयन
केश्रीश्यामघन॥ बोलेश्रीगोपा
ल॥ सुनोगोपिकाममवचन॥
॥४६॥ कवित॥ जोशरणहमारी
तुमआवतमोयकंसकोभयदि
खरावतनाहीं॥ तौनामहमारो
दीनदयालजोआवतशरणहमा
रीमाहीं॥ जोसवनजइकहमकों
भजतहेउनकोंहमहोतहेंसदा
सहाई॥ तुमनेममशरणत्याग
दईअबदेतहोकंसरजाकीदु

हाई ॥ ४७ ॥ देखोलूटनहूं
तुमेकैसोनीकवनाय मेरेवार
उखाडलेकंसराजअवआय
॥ ४८ ॥ गो का चुः
यहसुनवोलीगोपिकासुननंद
लालसुजान कहांकेतुमराजा
भएहमसोंमांगनदान हमसों
मांगनदानअजहूंहोगोपकहै
या वेचनहैंदधदूधसदानेरेवा
पओरमैया गौवछरनकेश्याम
सदावनमांहंचरैया अवलूटे
वनमांहंहमेत्तूंहैहैदैया ॥ ४९ ॥
॥ हमरेनृपवृषभान
तिननवसायोहैतुमे यहसीम
उनकीजान तुमरेवावाकोक
हा ॥ ५० ॥ श्री पा उ च

ग्वा·ली·
११

यहसुन गुपयनकेवचनहुं का
रे गोपाल। ग्वालनकों आज्ञाक
रीलूटोरे ब्रजवाल ॥ ५१ ॥ कवित्त ॥
यह आज्ञाले श्रीमोहनकी नवग्वा
लनढील करीकछुनाहीं ॥ गुपय
नके कुंडमें कूदपडे बलदाऊ औ
र मोहनहूं माहीं ॥ इक इकमट
कीदशदशग्वाला दधषानलगे
बैठे इक ठांईं ॥ योंटेरकहत सब
ग्वालन सों श्रीमोहन औरबल
रामगुसाईं ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ माल
क दर्जनको मिल्यो षाओसखा
अंघाय। तुमकों मेरी सप्नहै जि
न भूषोरह जाय ॥ ५३ ॥ सोरठा ॥
लूटीजब ब्रजनार। सब अनिहीं
व्याकुल भईं ॥ हाहाकरत पुकार

मूलसकलसुधबुधगई ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ केनककी नवचोली फाटी
वहुगुपयन की मट की फूटी ॥ केन
ककी फाटगई साडी केनक वेना
वंदी छूटी ॥ केनक केलहंगा टूकभ
ए केनक की छन चूडी टूटी ॥ नीकी
विधसों नंद के छैला वनमैंया वि
धगोपी लूटी ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ आ
पहूं षान और सखन सों आज्ञा
करत गुपाल ॥ वहुत पेट भर भर
सकल षाओ मेरे ग्वाल ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ यह सूमन को अवमा
ल मिल्यो नीकी विधषायवच
न ढरकाओ ॥ वहु दिवस विषें ये
हाथ लगी ऐसो दिनकाल वहुर
नहीं पाओ ॥ जवषायचुको गोर

सइनकोफोडोभाजनवनकोंभ
जजाओ॥ गोपीरोवनवोलनवा
णीकवहूंनोश्यामअपनघरआ
ओ॥५७॥दोहा॥ नेकदहीढरका
इयोवंधेऊखरीसाथ॥ अवनोढ
रकायोमननदेखोगेव्रजनाथ
॥५८॥दोहा॥ हमतवछुटवायो
ऊनोजसुमनसोंसिरटेक॥ अव
सनमुखवंधवायकेदयाकरेंन
हीनेक॥५९॥सोरठा॥ जोनैहं
मसोंकीन॥ तैसीहमनोसोंकरें॥
सुनमोहनपरवीन॥ नवहमस
वआनंदभरें॥६०॥ श्रीगोपा
लउवाच॥सोरठा॥यहसुनवोले
श्याम॥ तुमेसप्रसुनपतिनकी॥
अवहींजासववाम॥ धगडेकी

चुकलीकरो ॥ ६१ ॥

दिनकोंमारूंबाट ॥ निसतुम
घरचोरीकरूं ॥ मोकोंसप्नहै
नंदकी ॥ यहीसदाअवप्रनधरूं
॥ ६२ ॥ गोरसखाद
धदूधतेंभरेजोदोऊहाथ ॥ पूंछ
सखीकेवस्त्रसोंभाजेनवब्रजना
थ ॥ भाजेनवब्रजनाथसंगदा
ऊऔरग्वाला ॥ तजकेसांकरी
खोडरूंधमैंगएगुपाला ॥ गो
रसप्रभुकरवेचघरनआई
ब्रजवाला ॥ यहलीलायाभांतक
रीब्रजमैंनंदलाला ॥ ६३ ॥
आनंदयहलीलासदापढेसु
नेचितलाय ॥ नाघरमैंभोज
नकरेंगोरसब्रजपतिआय ॥ ६

॥दोहा॥ आनंदवनकाशीपु
रीजहांवसकेआनंद॥ गुणगा
एगोपालकेदयाकरीगोविंद॥
॥६५॥दोहा॥ संवतमहापुनी
तहैठारहसौचालीस॥ पूर्णदा
नलीलाकरीहरिहनिवावेंसी
स॥६६॥ इतिश्रीदानलीलाआ
नंदकृतभाषायांसंपूर्णसमाप्तं
॥दोहा॥ अतिउत्तमकाशीनग
रराजमंदिरनिजधाम॥ लिखी
ज्योतिषीविप्रनेनामबुलाकी
राम॥१॥ षष्ठवेदध्वनिवर्षमें१८४६
श्रावणशुक्लपछान॥ तिथ्यचतु
र्थीवाररविउत्तराफाल्गुनिजा
न॥२॥श्रीगोपालायनमः॥॥
श्रीगोपीजनवल्लभायनमः॥